थेरी गाथा

बौद्ध भिक्षुणियों के गीत

बौद्ध धर्म के बारे में हम सब जानते हैं। बौद्ध भिक्षुणियों के बारे में भी सुना है। आज इन भिक्षुणियों के गीतों के बारे में बात करेंगें। इन गीतों को कहते हैं "थेरी गाथा"। थेरी यानी भिक्षुणी। गाथा यानी गीत। थेरी गाथा यानी बौद्ध भिक्षुणियों के गीत।

थेरी गाथा औरतों की लगन और दिमागी जागरूकता का बखान है। इसकी बातें और भी ज्यादा सच्ची और आकर्षित करती हैं जब मालूम होता है कि इसके गीत पच्चीस सौ साल पहले रूढ़िवाद और संस्कारों की चार-दीवारी में रहने वाली औरतों द्वारा गाए गए थे।

थेरी गाथा औरतों की पहली साहित्यिक रचनाओं में से एक है। पर इसके गीत साहित्य के रूप में नहीं उभरे। गौतम बुद्ध के समय से मुंह-ज़बानी सुने गए। 80 ई०पू० में बौद्ध ग्रंथ त्रिपिताका में। पहली बार लिखे गए। यह ग्रंथ पाली भाषा में था। इसे ओला की पत्ती पर लिखा गया। आज थेरी गाथा दुनिया की बेहतरीन रचनाओं में गिनी जाती है।

साहित्य में समाज की झलक दिखाई देती है। थेरी गाथा के गीत 2500 साल पहले के बारे में बताते हैं। उस समाज में भी औरतें थीं। होशियार और सक्षम औरतें। मज़बूत इरादों वाली। जो चाहतीं हासिल करके रहतीं। मुश्किलों का डटकर सामना करतीं। ये औरतें बौद्ध धर्म मानती थीं। दीक्षा लेनी वाली कुछ औरतें ब्राह्मण परिवारों से भी थीं। गीतों के ज़रिए अपने अनुभव बांटती। थेरी गाथा के इन्हीं गीतों से हम इन औरतों के बारे में जान पाते हैं।

बौद्ध धर्म में पहली बार औरतों को दीक्षा दी गई। पर शुरू से ही ऐसा नहीं था। पहले यह अधिकार सिर्फ़ पुरुषों तक ही सीमित था। महाप्रजापति गौतमी के कहने पर ही गौतम बुद्ध ने औरतों को दीक्षा देना मंज़ूर किया। गौतमी राजकुमार सिद्धार्थ की सौतेली मां थी। राजकुमार सिद्धार्थ ही बाद में गौतम बुद्ध के नाम से जाने गए। हालांकि बुद्ध पहले गौतमी की बात मानने को राज़ी नहीं हुए। पर गौतमी ने भी संघर्ष करना नहीं छोड़ा। आख़िरकार बुद्ध ने उनकी बात मान ली। गौतमी ने दूसरी औरतों को दीक्षा देने का अधिकार भी हासिल किया।

प्रमुख थेरिओं को दूसरी औरतों को दीक्षा देने का अधिकार था। इन्होंने बहुत-सी औरतों को दीक्षा दी। इनमें से कुछ औरतों ने अर्हत बनने पर खुशी के गीत गाए। थेरी गाथा में इकहत्तर थेरियों के गाए पांच सौ गीत हैं।

थेरी गाथा में एक और बात हमारे सामने आती है। वह है औरतों के लक्ष्य पाने के मज़बूत इरादे। जैसे प्रजापति गौतमी दीक्षा लिए बग़ैर चैन से नहीं बैठीं। तारिका को उनके पति ने चोला धारण करने नहीं दिया। तब वह अपना रोज़ाना का काम चुपचाप करने लगी। हारकर उनके पति खुद उन्हें संघ में छोड़ आए। इसी तरह सुमेघा ने अपने मां-बाप और मंगेतर की

बात नहीं मानी। शादी के लिए हां नहीं की। तब उन्हें अपनी मर्ज़ी करने की इजाज़त मिली।

थेरी गाथा में औरतों को निचला दर्जा शायद ही कहीं दिया हो। इसी दासी के गीत में औरतों की घरेलू ज़िन्दगी के बारे में विस्तार से बताया गया है। इसी दासी रुढ़िवादी बाह्मण परिवार से थी। सास-ससुर और पति की सेवा करने में ही उनका जीवन बीता था। वैसे भी ग़रीब वर्ग की औरत को रोज़मर्रा के काम से पीछा छुड़ाना मुश्किल ही था। सुमंगला माता की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। बर्तन-भांडों की देखभाल में वह पति का हाथ बंटाती थीं।

ऐसा नहीं कि औरतें सुकून की ज़िंदगी नहीं गुज़ारती थीं। उच्च वर्ग की औरतें ऐसा कर पाती थीं। रानियां-राजकुमारियां बाग-बगीचों में अपना वक्त बिताती थीं। सुजाता की कहानी से पता चलता है। उच्च वर्ग की औरतें अपनी सखियों के साथ वाटिका में घूमने जाती थीं। एक दिन वाटिका से लौटते समय सुजाता ने बुद्ध को देखा। तब उनके प्रवचन सुनने के लिए वह रुक गई।

दीक्षा लेने से औरतों को कुछ हद तक आज़ादी मिली। पर मर्दों के बराबर का दर्जा उनको नहीं मिला। इसके काफ़ी उदाहरण हैं। जैसे दीक्षा लेने के लिए कुंवारी लड़की को पिता की, और शादी-शुदा को पति की इजाज़त लेनी पड़ती थी। भिक्षुणियों की पहचान का भी सवाल था। वे अक्सर अपने बेटों के नाम से जानी जाती थीं। जैसे अभय माता (अभय की माता) और सुमंगला माता (सुमंगला की माता)।

काफ़ी बार औरतों को मजबूरी में भी दीक्षा लेनी पड़ती थी। ऐसा इसलिए क्योंकि शादी से पहले ही उसका मंगेतर गुजर गया हो। अभिरुपा नंदा और जेंता की कहानियां कुछ ऐसी ही मिसालें हैं। उनके घरवालों ने उन्हें मनहूस समझा और दीक्षा लेने पर मजबूर किया। इसके बावजूद भी दोनों ने संघ में धर्म का सबसे उच्च लक्ष्य प्राप्त किया।

कुछ औरतों ने दीक्षा लेने के बाद किसी विशेष क्षेत्र में नाम कमाया। जैसे धम्मादीना और सुखव ने धर्म के प्रचार में महारत हासिल की। उप्पलावना थेरी चमत्कार करने के लिए जानी जाती थीं। कुछ लोगों को विश्वास ही नहीं होता था कि औरतें भी इस तरह से चमत्कार कर सकती हैं। सोमा के गीत से यह बात साफ़ होती है। जब उससे पूछा गया, "अपने दो इंच के दिमाग़ से ऋषि-मुनियों जैसी शक्ति औरतें कैसे हासिल कर सकती हैं?" उसने जवाब दिया, "दिमाग़ अनुशासित हो तो औरत होना रुकावट कैसे हो सकता है?"

थेरी गाथा औरतों की लगन और दिमाग़ी जागरुकता का बखान है। इसकी बातें और भी ज्यादा सच्ची और आकर्षित लगती हैं। जब मालूम होता है कि इसके गीत, पच्चीस सौ साल पहले, रूढ़िवाद और संस्कारों की चारदीवारी में रहने वाली औरतों द्वारा गाए गए थे। □

जुही द्वारा अनुदित

(साभार-विमेन एंड मीडिया कलेक्टिव कोलंबो)